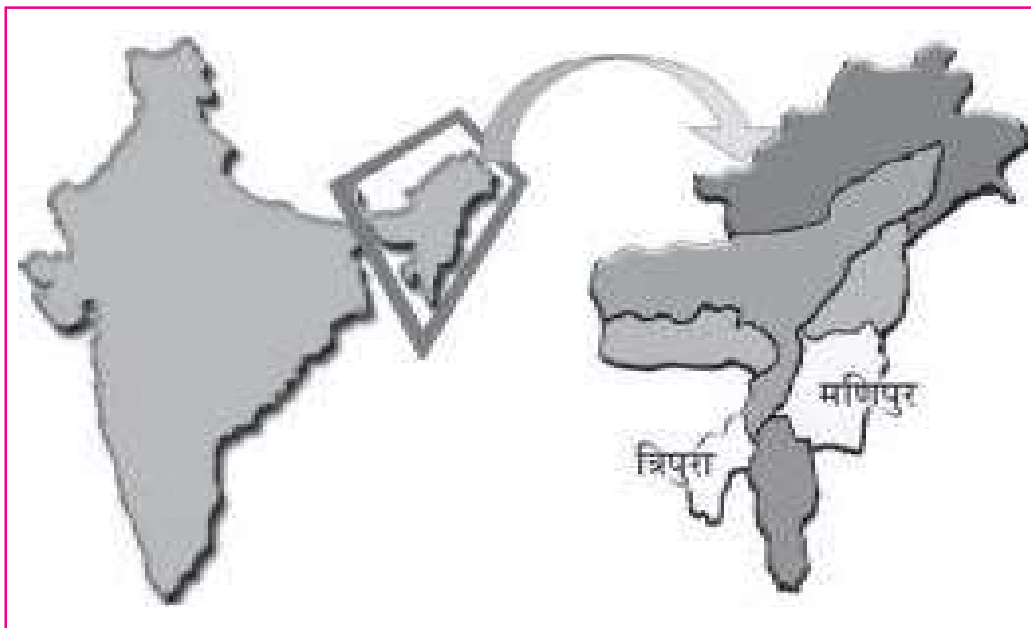




पाठ-छह

त्रिपुरा और मणिपुर का प्राचीन सम्बन्ध: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण

त्रिपुरा बहुत ही प्राचीन राज्य है। एक समय था; वहाँ के लोगों में इतिहास लिख कर रखने की प्रथा नहीं थी। फिर भी जनश्रुति के आधार पर त्रिपुरा की सीमा काफी लम्बी-चौड़ी थी। प्राचीन त्रिपुरा के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें 'राजमाला' नामक ग्रंथ खोल कर देखना पड़ता है। इस ग्रंथ में त्रिपुरा का ऐतिहासिक विवरण काव्यात्मक शैली में लिखा हुआ है।



राजमाला तथा इतिहासकारों के अनुसार त्रिपुरा का राजवंश आदि कालीन चन्द्रवंश से जुड़ा हुआ बताया जाता है। एक बार चन्द्रवंशीय राजा ययाति ने क्रुद्ध होकर अपना पुत्र राजकुमार द्रुह्य को अपने राज्य से निर्वासित किया था। राजकुमार द्रुह्य किरात के राज्य में आया। उसने किरात राज को पराजित कर अपने राज्य की स्थापना 'कोपल' नदी के किनारे की थी। उन्होंने अपने राज्य की राजधानी का नाम 'त्रिवेग' रखा था। इसी त्रिवेग के त्रिपुरा होने का उल्लेख राजमाला में किया गया है। लेकिन त्रिपुरा राज्य के नामकरण संबंधी बातों में पंडितों और इतिहासकारों ने अगल-अलग मत और वाद-विवाद प्रस्तुत किए हैं। अब इस संबंध में और खोज करने की जरूरत पड़ रही है।

त्रिपुरा के प्रथम राजा माणिक्य थे। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक उनके वंशज त्रिपुरा में शासन करते आए थे। सन् 1761 में त्रिपुरा अंग्रेजों के हाथ में पड़ गया।

इस प्रकार मणिपुर में भी कई राजा-महाराजाओं ने राज किए थे। त्रिपुरा का राजमाला जैसा ग्रंथ 'चैथारोल कुम्बाबा' यहाँ भी मौजूद है। इस ग्रंथ से यह पता चलता है कि सन् 33 में नोड्दा लाइरेन पाखड्बा मणिपुर के राजसिंहासन पर बैठे थे। इसके पश्चात क्रमशः कई राजा-महाराजाओं ने मणिपुर पर शासन किए थे। प्राचीन काल में मणिपुर को 'पोइरै मैतै', 'कड्लैपाक' अथवा 'मैत्रबाक' कहकर जाना जाता था। मणिपुर को पड़ोसी राज्यों और देशों के लोगों जैसे कि असमियों ने 'मेखला, मेखली', काछाड़ियों और त्रिपुरियों ने 'मोगली', शान लोगों ने 'कासे' तथा बरमियों ने 'कथे' कहकर जाना। दूसरी तरफ मैतै लोगों ने बरमा को 'अवा', असाम को 'तेखाउ', त्रिपुरा को 'तखेल' तथा चीन को खागी के नाम से जाना।

मैतै राजाओं को मैदिङ्ङु कहकर जाना जाता था। उस समय राजा के बदले मैदिङ्ङु कहा करता था जैसे मैदिङ्ङु नाउथिङ्ङु खोड, मैदिङ्ङु क्याम्बा, मैदिङ्ङु खागेम्बा, आदि आदि। मणिपुर में कई मैदिङ्ङु राजाओं ने राज किया था। मैदिङ्ङु क्याम्बा सन् 1476 में सिंहासन पर बैठे थे। उसके राज्य-काल से मणिपुर के इतिहास

में एक नया अध्याय शुरू हुआ। सन् 1709 को गरीबनिवाज महाराज सिंहासन पर बैठे। उसने बरमा पर चढ़ाई करके अपने पिता के प्रति किये कार्यों का प्रतिशोध लिया और अपने पिता की इच्छा पूरी कर दी। उनके राज काल से मणिपुर में हिन्दू धर्म का आना प्रारम्भ हुआ।

त्रिपुरा और मणिपुर का संबंध बहुत ही पुराने समय से होता आया है। 'राजमाला' में उल्लेख है कि मणिपुर के राजा की पुत्री का विवाह त्रिपुरा के राजा तैदक्षिण के साथ सम्पन्न हुआ। त्रिपुरा के राजा माणिक्य ने (सन् 1785-1806) मणिपुर की राजकन्या के साथ विवाह करके दोनों राज्यों का संबंध और मज़बूत किया। दोनों राज्यों के इतिहास में सब कुछ दर्ज है, साथ ही इन दोनों राज्यों के बीच हुए संघर्ष का भी उसमें उल्लेख है।

त्रिपुरा के राजा दिवतीय धर्म माणिक्य के समय मुगलों ने आक्रमण कर के घाटी के कुछ भाग अपने कब्जे में कर लिया। इसके बाद राज परिवार में सिंहासन को लेकर आपसी संघर्ष हुआ। त्रिपुरा की इस असंतुलित अवस्था के मौके का फायदा उठाकर मणिपुर के राजा गरीबनिवाज (पामहैबा) ने त्रिपुरा पर चढ़ाई की। उन्होंने त्रिपुरा की फ़ौजों को हराकर दक्षिणी भाग अपने कब्जे में ले लिया। इससे राजा गरीबनिवाज का नाम 'तखेलडम्बा' पड़ गया।

त्रिपुरा के राजाओं ने मणिपुर की राज कन्याओं से विवाह करके दोनों राज्यों का सम्पर्क और मज़बूत किया। राजर्षि भाग्यचन्द्र की सुपुत्री रासेश्वरी को दिया हुआ राधामाधव का विग्रह आज तक आगरतला के राधानमड़ के एक मन्दिर में स्थापित है। इस प्रकार दोनों राज्यों के राज परिवार में वैवाहिक सम्बन्ध बहुत लम्बे समय तक चलता रहा। दोनों राज्यों के बीच हुए संबंध के साक्षी स्वरूप भूमि, सामग्री तथा मैतै परिवार आज तक त्रिपुरा में मौजूद हैं।

कठिन शब्दों के अर्थ—

आदी	= अभ्यस्त, स्वामाविक।
जन-श्रुति	= वह बात जिसे लोग परंपरा से सुनते आए हो, अफवाह।
निर्वासित करना	= देश से निकालना।
मौजूद	= उपस्थित, तैयार।
विवादास्पद	= विवादग्रस्त, बाद विवाद करना।
निष्कर्ष	= परिणाम, निश्चय।
मौलिकता	= असलियत, वास्तविकता।
पन्ना	= पृष्ठ
दर्ज है	= अभिलेख है।
संघर्ष	= टकराव, कलट।
असंतुलित	= अव्यवस्थित, असंयत
सम्पर्क	= मेल, कड़ी, संलग्न।
प्रातिशोध	= बदला, प्रातिकार।

प्रश्न-अभ्यास

1. प्राचीन त्रिपुरा का विवरण कौन-से ग्रंथ में मिलता है ? वह ग्रंथ किस शैली में लिखा हुआ है ?
2. मणिपुर के प्राचीन काल के नाम तथा पड़ोसी राज्यों तथा देशों द्वारा पुकारे जाने वाले मणिपुर के अलग-अलग नामों को लिखिए।

3. मैतै लोगों ने त्रिपुरा को किस नाम से पुकारा ?
4. 'तखेलडम्बा' कौन थे ? उन्हें तखेलडम्बा क्यों कहा गया ?
5. पुराने समय में मणिपुर और त्रिपुरा दोनों राज्यों के बीच संबंध स्थापित करने की मुख्य नीति क्या थी ?
6. प्राचीन काल में मणिपुर और त्रिपुरा दोनों राज्यों के बीच हुए सम्बन्धों को संक्षेप में लिखिए।
7. त्रिपुरा राज्य का एक नक्शा खींच कर उसमें राजधानी आगरतला निर्धारित कीजिए।
8. त्रिपुरा राज्य से संबंधित पुस्तकें पढ़कर उस राज्य के बारे में दस वाक्य लिखिए।
9. त्रिपुरा में रहनेवाले मणिपुरियों के बारे में अपने गुरुजनों से जानकारी प्राप्त कीजिए और उसे कक्षा में सुनाइए।

* * * * *